विषय-सूची

आमुख
प्रस्तावना

अध्याय एक

महाराज प्रियव्रत का चरित्र
अध्याय का सारांश
गृहस्थ जीवन का बंधन
भगवान् के चरणारविन्द की छाया
प्रियव्रत द्वारा नारद के चरणारविन्द की खोज
प्रियव्रत को देखने के लिए ब्रह्मा का भूलोक आना
प्रियव्रत से ब्रह्मा की बातचीत
वर्णाश्रम विभागों की व्यवस्था वैज्ञानिक है
परमेश्वर द्वारा मनुष्य का मार्गदर्शन
आत्म-संयमी न होने वाले की छह सपत्नियाँ
प्रियव्रत द्वारा ब्रह्मा की आज्ञा अंगीकार किया जाना
प्रियव्रत के दस पुत्र
रानी बर्हिष्मती द्वारा प्रियव्रत की शक्ति का बढ़ाना
प्रियव्रत द्वारा रथ से सूर्य का पीछा करना
प्रियव्रत द्वारा वैराग्य के विषय में बोलना
प्रियव्रत के चरित्र के सम्बन्ध में श्लोक

अध्याय दो

महाराज आग्नीध्र का चरित्र
आग्नीध्र द्वारा ब्रह्मा की पूजा किया जाना
पूर्वचित्ति द्वारा आग्नीध्र का आकृष्ट किया जाना
पूर्वचित्ति की शक्तिशाली चितवन
आग्नीध्र द्वारा सुन्दरी के शरीर की प्रशंसा
आग्नीध्र के नौ पुत्र
आग्नीध्र का पितृलोक भेजा जाना

अध्याय तीन

राजा नाभि की पत्नी मेरुदेवी के गर्भ से ऋषभदेव का जन्म
नाभि तथा उनकी पत्नी द्वारा विष्णु की पूजा
नाभि के समक्ष विष्णु का प्रकट होना
फल की कामना से यज्ञों का सम्पन्न किया जाना
नाभि द्वारा भगवान् के ही समान पुत्र की कामना करना
ऋषियों की स्तुतियों से भगवान् का प्रसन्न होना
मेरुदेवी के पुत्र रूप में भगवान् का प्रकट होना

अध्याय चार
भगवान् ऋषभदेव के लक्षण
नाभि के पुत्र में समस्त गुणों का प्राकट्य
ऋषभदेव का चक्रवर्ती सम्राट् होना
ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत
वर्णाश्रम धर्म के अनुसार ऋषभदेव द्वारा शासन चलाना
अध्याय पाँच
भगवान् ऋषभदेव द्वारा अपने पुत्रों को उपदेश
मानव जीवन का उद्देश्य
भौतिक शरीर–दुखों का कारण
घर, पत्नी तथा सन्तान के प्रति आसक्ति
हृदय–ग्रंथि को छिन्न करना
ऋषभदेव, श्री भगवान् के रूप में
भगवान् का ब्राह्मणों के प्रति झुकाव
इन्द्रियों का असली कार्य
ऋषभदेव द्वारा अवधूत का वेष अंगीकार किया जाना
ऋषभदेव द्वारा गायों तथा हिरनों का–सा आचरण
अध्याय छह
भगवान् ऋषभदेव के कार्यकलाप
मन के साथ मित्रता न करना
जंगल की आग में ऋषभदेव के शरीर का भस्म होना
पतित आत्माओं के उद्धार हेतु ऋषभदेव का अवतार
ऋषभदेव की लीलाओं का श्रवण
अध्याय सात
राजा भरत के कार्यकलाप
भरत तथा पंचजनी के पाँच पुत्र
वासुदेव को प्रसन्न करने के लिए भरत द्वारा यज्ञों का अनुष्ठान
भरत द्वारा गृहस्थ जीवन का परित्याग
भरत द्वारा सूर्योदय में नारायण की पूजा
अध्याय आठ
भरत महाराज के चरित्र का वर्णन
मृग शावक पर भरत की सहानुभूति
मृग के स्नेह में भरत का बँध जाना
भरत द्वारा मृग को राजकुमार के रूप में अंगीकार करना
मृत्यु के बाद भरत को मृग शरीर की प्राप्ति
भरत का पश्चात्ताप

अध्याय नौ
जड़ भरत का महान् चरित्र
ब्राह्मण के परिवार में भरत का जन्म लेना
अपने पिता के समक्ष जड़ भरत का मूर्खवत् व्यवहार करना
जड़भरत का केवल भोजन के लिए कार्य करना
साक्षात् देवी काली द्वारा जड़ भरत की रक्षा करना
अध्याय दस
जड़ भरत तथा महाराज रहूगण की वार्ता
राजा की पालकी ढोने के लिए जड़ भरत को बाध्य किया जाना
राजा द्वारा जड़ भरत की आलोचना करना
राजा को जड़ भरत का उत्तर
जड़ भरत द्वारा पुन: पालकी ढोना
जड़ भरत से राजा की प्रार्थना
राजा द्वारा प्रश्नों का पूछा जाना
अध्याय ग्यारह
जड़ भरत द्वारा राजा रहूगण को शिक्षा
भौतिक सुख नगण्य हैं
बन्धन तथा मुक्ति मन के द्वारा उत्पन्न होते हैं
मुक्त आत्मा को वस्तुएँ स्पष्ट दिखती हैं
भक्ति द्वारा मन पर विजय पाना
अध्याय बारह
महाराज रहूगण तथा जड़ भरत की वार्ता
जड़ भरत के उपदेश ओषधि के समान हैं
ब्रह्माण्ड का वास्तविक अस्तित्व नहीं है
भक्त के अनुग्रह से परम सत्य का प्राकट्य होता है
महान् भक्तों की संगति
अध्याय तेरह
राजा रहूगण तथा जड़ भरत के बीच और आगे वार्ता
संसार रूपी जंगल में लुटेरे
गृहस्थ जीवन की तुलना जंगल की अग्नि से
जीवात्माएँ परस्पर शत्रुता उत्पन्न करती हैं
राजा बहिरंगा-शक्ति के शिकार के रूप में
जड़ भरत का राजा द्वारा किये गये अनादर को भूल जाना
अध्याय चौदह
भौतिक संसार भोग का एक महान् वन
भौतिक परिवेश द्वारा आत्मा का बद्ध होना

पारिवारिक सदस्य भेड़ियों तथा सियारों के तुल्य
स्वर्ण ऐश्वर्य तथा ईर्ष्या का कारण है
भौतिक सुख की मृगतृष्णा
तथाकथित साधुओं द्वारा वैदिक नियमों के विरुद्ध प्रचार करना
गृहस्थ जीवन दावाग्नि के समान है
निद्रारूपी अजगर द्वारा भौतिकतावादियों का निगला जाना
अध्यात्मवादियों द्वारा सकाम कर्म के पथ की भर्त्सना
बद्धजीव के कष्ट
अनधिकृत मानव-निर्मित भगवान्
गृहस्थ जीवन से क्षणिक इन्द्रिय-सुख का मिलना
भौतिक जीवन में कोई सुखी नहीं
सकाम कर्म की लता
भरत महाराज के विचित्र कार्यकलाप
महाराज भरत का जीवन मननीय है

अध्याय पन्द्रह

प्रियव्रत के वंशजों का यश-वर्णन
सुमति द्वारा ऋषभदेव के पथ का अनुगमन
प्रामाणिक उपदेशकों के आदर्श राजा प्रतीह
राजा गय के राज्यादेश के गुण
दक्ष की कन्याएँ राजा गय का अभिषेक करती हैं
प्रियव्रत का वंशमणि राजा विरज

अध्याय सोलह

जम्बूद्वीप का वर्णन
विश्व रूप का चिन्तन
जम्बूद्वीप स्थल के नौ विभाग
सुमेरु पर्वत के पार्श्ववर्ती चार पर्वत
आम्ररस से निर्मित अरुणोदा नदी
महाकदम्ब वृक्ष से मधु की नदियों का प्रवाह
सुमेरु पर्वत के पादवर्ती पर्वत
ब्रह्माजी की पुरी

अध्याय सत्रह

गंगा-अवतरण
गंगा नदी की उत्पत्ति
गंगा का अन्तरिक्ष पथ में से प्रवाह
सकाम कर्मों का क्षेत्र भारतवर्ष
नारायण का चतुर्व्यूह

शिव द्वारा संकर्षण की स्तुति
शेष द्वारा अपने फनों पर ब्रह्माण्डों को धारण करना
अध्याय अट्ठारह
जम्बूद्वीप के निवासियों द्वारा भगवान् की स्तुति
भद्रश्रवा द्वारा हयशीर्ष की पूजा
हयग्रीव द्वारा वेदों का उद्धार
प्रह्लाद द्वारा उच्चरित मंत्र
मुकुन्द के कार्यकलापों का श्रवण
कामदेव द्वारा अपनी दिव्य इन्द्रियों का आस्वाद
श्रीकृष्ण एकमात्र पति
वैवस्वत मनु द्वारा भगवान् मत्स्य की पूजा
अर्यमा द्वारा कच्छप रूप विष्णु की पूजा
कपिलदेव द्वारा दृश्य जगत का विश्लेषण
आदि शूकर रूप भगवान्
अध्याय उन्नीस
जम्बूद्वीप का वर्णन
रामचन्द्र के नित्य सेवक के रूप में हनुमान
भगवान् रामचन्द्र का सन्देश
अयोध्या के भक्तों का परम धाम वापस जाना
नर-नारायण की महिमा
भौतिकतावादी शरीरिक सुखों में आसक्त रहते हैं
भारतवर्ष की मुख्य नदियाँ
देवताओं द्वारा भारतवर्ष में मानव जन्म लेने की अभिलाषा
देवताओं की पूजा करने वालों को भगवान् द्वारा वरदान
जम्बूद्वीप को घेरने वाले आठ छोटे-छोटे द्वीप
अध्याय बीस
ब्रह्माण्ड-रचना का विश्लेषण
प्लक्षद्वीप के वासियों द्वारा सूर्य की प्राप्ति
सुरासागर से घिरा शाल्मलीद्वीप
कुशद्वीप में कुशों के झाड़
वरुणदेव द्वारा रक्षित क्रौंच पर्वत
मट्ठे के सागर से घिरा शाकद्वीप
पुष्करद्वीप का बृहत् कमल-पुष्प
स्वर्ण से निर्मित भूमि
लोकों को धारण करने के लिए भगवान् द्वारा अपने रूप प्रकट करना
अध्याय इक्कीस

सूर्य की गतियों का वर्णन
समस्त लोकों का स्वामी सूर्य
मानसोत्तर पर्वत के ऊपर से सूर्य की यात्रा
चन्द्रमा का दिखना और अदृश्य होना
सूर्यदेव का रथ
अध्याय बाईस
ग्रहों की कक्ष्याएँ
सूर्य तथा ग्रहों की गतियाँ
सूर्यदेव की तीन प्रकार की गतियाँ
चन्द्रमा भगवान् के प्रताप का प्रतिनिधि
बृहस्पति ब्राह्मणों के लिए अनुकूल है
अध्याय तेईस
शिशुमार ग्रह-मण्डल
समस्त नक्षत्रों तथा लोकों की धुरी स्वरूप ध्रुवतारा
शिशुमार का रूप
शिशुमार चक्र की पूजा का मंत्र
अध्याय चौबीस
नीचे के स्वर्गीय लोकों का वर्णन
सूर्य तथा चन्द्रमा का वैरी राहु
कृत्रिम स्वर्गों में सुन्दर नगरियाँ
बल असुर द्वारा की सृष्टि तीन प्रकार की स्त्रियाँ करना
बलि महाराज द्वारा वामनदेव को सर्वस्व दान
बलि महाराज की वाणी
अनेक फनों वाले सर्पों का स्थान महातल:-
अध्याय पच्चीस
भगवान् अनन्त की महिमा
भगवान् अनन्त का सौन्दर्य
अनन्तदेव द्वारा क्रोध तथा असहशीलता को वश में किया जाना
नारद मुनि द्वारा सदैव अनन्त का गुणगान
अनन्त द्वारा ब्रह्माण्ड का सुगमता से पालन
अध्याय छब्बीस
नारकीय लोकों का वर्णन
नरक लोकों की स्थिति
विभिन्न नरकों के नाम
रुरु नामक पशु
निर्दोष व्यक्ति को दण्ड देने की सजा

अवैध स्त्री-पुरुष-संभोग के लिए दण्ड
पशुओं की वृथा बलि के लिए दण्ड
ईष्यालु सर्पों के तुल्य मनुष्यों को दण्ड
पुण्यात्मा तथा पापी दोनों पृथ्वी पर वापस आते हैं
परिशिष्ट
लेखक परिचय